जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

नि:स्वार्थ भाव और पवित्र हृदय से सही दिशा में किया गया सतत प्रयास कभी असफल नहीं होता।

ह्न आत्मा ही है शरण, पृष्ठ-29

वर्ष : 29, अंक : 1 | सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** | आजीवन शुल्क : 251 रुपये

अप्रैल (प्रथम), 2006 | प्रबन्ध सम्पादक : **पं. संजीवकुमार गोधा व पं. जितेन्द्र वि. राठी** | वार्षिक शुल्क : 25 रु., एक प्रति : 2/-

' पुराण-साहित्य में जीवन मूल्य ' विषय पर संगोष्ठी सानन्द सम्पन्न

जयपुर (राज.) : जैन अनुशीलन केन्द्र, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर तथा त्रिलोक उच्चस्तरीय अध्ययन एवं अनुसंधान संस्थान, कोटा के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 19 से 21 मार्च, 2006 तक **पुराण-साहित्य में जीवन मूल्य** विषय पर त्रिदिवसीय 24 वीं अखिल भारतीय जैन विद्या संगोष्ठी का आयोजन किया गया ।

19 मार्च को राजस्थान विश्वविद्यालय के सीनेट हॉल में प्रथम सत्र की अध्यक्षता डॉ. एन. के. जैन (कुलपति, राज. विश्वविद्यालय) ने की। मुख्य अतिथि न्यायमूर्ति श्री एन. के. जैन (अध्यक्ष, मानवाधिकार आयोग राज.) तथा विशिष्ट अतिथि डॉ. टी.सी. कोठारी, दिल्ली एवं श्री महावीरराज गैलड़ा (पूर्व कुलपति, जैन विश्वभारती) थे।

मुख्य वक्ता के रूप में आमंत्रित अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान **डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, जयपुर** ने 'पुराणों में जीवन मूल्य' के सन्दर्भ में कहा कि हमें जीवन मूल्यों को मनुष्य तक ही सीमित नहीं रखना चाहिये; क्योंकि जीवन तो कीड़े-मकोड़े, पेड़-पौधों का भी है। अत: हमें उस स्तर से अपनी बात सोचनी चाहिये । उन्होंने अपने उद्बोधन में भगवान महावीर के 10 भव पूर्व सिंह की पर्याय का प्रसंग तथा नेमिकुमार की बारात के वापस लौटने के प्रसंग का वैज्ञानिक एवं तार्किक विवेचन करते हुये उन आख्यानों में छिपे हुये मार्मिक बिन्दुओं को उजागर किया। साथ ही उपस्थित विद्वत समुदाय से इस संगोष्ठी के माध्यम से पौराणिक आख्यानों का सूक्ष्मता से अध्ययन करने एवं उनमें छिपे गहनभावों को पढ़ने/समझने की अपील की।

समारोह का शुभारंभ डॉ. रमेशचन्दजी निवाई ने दीपप्रज्वलन करके किया। विषय का प्रवर्तन डॉ. पी.सी. जैन एवं श्री राजकुमारजी काला ने किया।

उद्घाटन सत्र के पश्चात् संगोष्ठी में आये हुये सभी विद्वानों को पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा सत्साहित्य भेंटकर सम्मानित किया गया।

संगोष्ठी के विविध सत्रों की अध्यक्षता पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, पण्डित शिवचरणजी जैन मैनपुरी, प्रो. दयानन्दजी भार्गव, पण्डित ज्ञानचन्दजी बिल्टीवाला, पण्डित ज्ञानचन्दजी खिन्दूका ने की।

समारोह में पण्डित शांतिकुमारजी पाटील, डॉ. राजेन्द्रकुमारजी बंसल अमलाई, पण्डित ज्ञानचन्दजी खिन्दूका, डॉ. पी.सी. रांवका, श्री अखिलजी बंसल, ब्र. भरतभाई, पण्डित संजीवकुमारजी गोधा, डॉ. भागचन्दजी शास्त्री, डॉ. अनामिका जैन, श्रीमती मंजू जैन, श्रीमती पारसमणी खीचा आदि 60 विद्वानों ने अपने पत्र के माध्यम से पुराणों में वर्णित जीवन मूल्यों को विविध दृष्टिकोणों से प्रतिपादित किया।

सभी सत्रों में संचालन डॉ. पी.सी. रांवका एवं श्रीमती कोकीला सेठी ने किया।

संगोष्ठी के मध्य सभी विद्वानों को दि.जैन अतिशय क्षेत्र पदमपुरा की वंदना कराई गई। साथ ही सभी विद्वानों ने डॉ. टी.सी. जैन (कोठारी) द्वारा चलाये जा रहे शाकाहार शोध केन्द्र, ओम टावर का पर्यावलोकन किया।

दिनांक 21 मार्च को समापन समारोह के मुख्यअतिथि पूर्व मुख्यमंत्री श्री शिवचरण माथुर थे। अध्यक्षता प्रो.एम.एल.छीपा ने की।

इस अवसर पर वयोवृद्ध शिक्षाविद् श्री तेजकरणजी डंडिया, प्रो. हरिराम आचार्य, श्री राजकुमारजी काला एवं श्री विवेकजी काला का सम्मान किया गया तथा देवर्षि कलानाथ शास्त्री के मार्मिक उद्बोधन का लाभ मिला।

त्रि-दिवसीय इस विद्वत्संगोष्ठी का संयोजन एवं निर्देशन डॉ. पी.सी. जैन ने किया।

आकाशवाणी पर वार्ता

श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के स्नातक पण्डित विरागजी शास्त्री, जबलपुर एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती स्वस्ति जैन द्वारा महावीर जयंती के पावन अवसर पर आकाशवाणी जबलपुर में 10-10 मिनिट की वार्ता प्रसारित की जायेगी। दोनों के विषय क्रमश: 'प्रेम और शांति के प्रतिमूर्ति भगवान महावीर' तथा 'भगवान महावीर के सिद्धान्तों की वर्तमान समय में प्रासंगिकता' है।

साधना चैनल देखना न भूलें

प्रतिदिन रात्रि में 10.20 पर डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के प्रवचनों को देखना/सुनना न भूलें। प्रसारण में 5-7 मिनिट की देरी भी हो सकती है। यदि निर्धारित समय से 10 मिनिट बाद तक भी प्रवचन प्रारंभ नहीं हो तो श्री पीयूषकुमारजी शास्त्री से 9414717829 अथवा (0141) 2705581 नं. पर सम्पर्क करें।

ध्यान दें

मार्च (द्वितीय),06 के अंक में कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट, देवलाली ऑफिस का फोन नं. गलत छप गया था। कृपया उसके स्थान पर निम्नानुसार सही नं. नोट करें ह्न **(0253) 2491044**

सम्पादकीय –

ये तो सोचा ही नहीं

ह्न रतनचन्द भारिल्ल

1. प्रेम संबंध हों, पर ऐसे...

बी.ए. अन्तिम वर्ष में आते-आते ज्ञानेश के सभी साथी उसके अन्तर्बाह्य व्यक्तित्व से भली-भाँति परिचित हो चुके थे। बहुत से साथी उसकी सरलता, सज्जनता, नि:स्वार्थ सेवा की भावना, परोपकार की प्रवृत्ति और सभी दुर्व्यसनों से सदा दूर रहने के कारण उससे प्रभावित भी थे। उद्दण्ड और ऊधमी छात्र भी उसका आदर करते थे। अपने इन्हीं गुणों के कारण वह कॉलेज का सर्वमान्यह्न निर्विरोध नेता भी बन गया था; पर उसने अपने सहज स्वभाव से किसी को कभी ऐसा महसूस नहीं होने दिया कि ह्न **' मैं अन्य छात्रों से कुछ विशेष हूँ।'**

हर बात को, हर वस्तु को और हर घटना को देखने के दो पहलू हो सकते हैं, जहाँ फूल हैं वहीं कांटे भी हैं, जो फूलों के पक्ष को देखते हैं, वे खुश रहते हैं और जो कांटों-कांटों को ही देखते हैं, वे दिन-रात रोते ही रहते हैं।

इतनी समझ तो अनपढ़ कुम्हार जैसे लोगों में भी होती है कि उन्हें गधे जैसे मन्दबुद्धि पशु में भी उसकी मन्दबुद्धि की कमी नहीं दिखती; बल्कि उसकी **ईमानदारी, सीधापन, परिश्रमशीलता और शुद्ध शाकाहारी होने के गुण ही दिखाई देते हैं।** तभी तो वे उसका प्रेमपूर्वक पालन-पोषण और उपयोग करते हैं।

काश ! हम भी गधे के जीवन से उपर्युक्त गुण ग्रहण कर लें तो इस दुनिया का नक्शा ही बदल सकता है।

यद्यपि ज्ञानेश अभी 22-23 वर्ष का ही होगा; परन्तु वह अपने आत्मविश्वास, गंभीरता, उदारता, निशंकता और निर्भयता आदि विशेषताओं के कारण 25-26 वर्ष जैसा लगता था। उसे अपने पिता धर्मेन्द्र द्वारा बचपन से ही नैतिकता का पाठ पढ़ाया गया था। इस कारण वह भारतीय संस्कृति और धार्मिक संस्कारों से ओत-प्रोत था।

कॉलेज में सहशिक्षा थी। छात्र-छात्रायें एकसाथ पढ़ते थे; परन्तु ज्ञानेश ने कभी किसी छात्रा की ओर आँख उठाकर नहीं देखा। अन्य छात्रों की भाँति छात्राओं से बात करने के मौके खोजना, उनके साथ घूमना-फिरना, होटल आना-जाना तो उसके लिए कल्पना से भी परे की बात थी। इस कारण अनेक चंचल स्वभाव की छात्राओं ने तो उसका नाम ही भोलानाथ रख दिया था; पर सुनीता उसके इन्हीं गुणों से प्रभावित थी। वह ज्ञानेश की इन्हीं विशेषताओं पर रीझ गई थी। वह ऐसे ही आदर्श जीवनसाथी की कल्पना अपने मन में संजोये थी।

परन्तु ज्ञानेश से बात करने की उसकी हिम्मत नहीं होती। क्या कहे ? कैसे कहे ? बात करने का कोई ठोस बहाना या आधार भी तो चाहिए न ? उसे भय था कि 'ज्ञानेश से बात करने से वह कहीं झिड़क न दे, सखी-सहेलियाँ उसकी हँसी न उड़ाने लगे, कोई देखेगा तो पता नहीं क्या-क्या मनगढ़न्त कल्पनायें करने लगेगा?' इसतरह न जाने कितने विकल्प उठा करते उसके मन में।

संयोग से दोनों की कक्षायें भी अलग-अलग थीं। क्लासरूमों के रास्ते भी अलग-अलग थे। मिलने का सहज संयोग संभव नहीं था। मात्र वार्षिकोत्सव में ही एक मंच पर मिलना होता था।

सौभाग्य से इस वर्ष ज्ञानेश के हाथ में ही सांस्कृतिक कार्यक्रमों का संचालन था और सुनीता को अपनी टीम के साथ नाटक का मंचन करना था। नाटक की निर्देशिका एवं नायिका स्वयं सुनीता थी। नाटक के मंचन में सुनीता की प्रस्तुति प्रशंसनीय रही। सभी छात्रों को उसे बधाई देने के बहाने बात करने का मौका मिल गया। ज्ञानेश का भी मन उसे बधाई देने को हुआ, पर चाहते हुए भी वह संकोचवश कुछ न कह पाया; परन्तु सुनीता ने ज्ञानेश के हाव-भाव से उसके मनोभावों को ताड़ लिया, अत: उसने ही हिम्मत करके ज्ञानेश से पूछ लिया ह्न कैसा लगा हमारे नाटक का मंचन? ज्ञानेश का अति संक्षिप्त उत्तर था ह्न 'नाटक नाटक जैसा लगा।'

सुनीता ने अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए कहा ह्न ' मैं कुछ समझी नहीं। '

ज्ञानेश ने पुन: एक वाक्य में ही उत्तर दिया ह्न 'इसमें न समझने जैसी बात ही क्या है ? नाटक नाटक की दृष्टि से बहुत अच्छा लगा।

नाटक में नायक-नायिका का चरित्र आदर्शरूप में ही प्रस्तुत किया जाता है। काश ! पात्रों के यथार्थ जीवन-चरित्र भी ऐसे ही आदर्श हो जाएँ, तो पृथ्वी पर ही स्वर्ग नजर आयेगा। परन्तु..।

सुनीता ने अपनी सफाई में कहा ह्न 'यह जो कुछ भी आपने देखा, वह सब मेरा और मेरे परिवार का यथार्थ ही है। मैं दिखावे में विश्वास कम ही करती हूँ, जितने भी दृश्य आपने नाटक में देखे, वे सब मेरे पारिवारिक जीवन की यथार्थ कहानी हैं।'

ज्ञानेश ने कहा ह्न 'यदि ऐसा है तब तो अति उत्तम बात है। मुझे भी ऐसे ही चरित्र पसन्द है।'

सुनीता ज्ञानेश की पसन्दगी से कुछ-कुछ आशान्वित हुई। उसे लगा कि 'धीरे-धीरे मैं ज्ञानेश के हृदय में अपना स्थान बना लूँगी।' इसी आशा से सुनीता ने ज्ञानेश को अपने बर्थ-डे पर आमंत्रित किया।

सुनीता का आमंत्रण पाकर ज्ञानेश सुनीता की बर्थ-डे पार्टी में सम्मिलित तो हो गया; परन्तु पता नहीं क्यों अन्यत्र व्यस्तता का कारण बताकर वह थोड़ी देर ही रुका। बर्थ-डे प्रेजेन्ट के रूप में 'आत्मोन्नति कैसे करें' नामक पुस्तक भेंट करके शीघ्र चला गया था।

ज्ञानेश के आने से सुनीता को तो हार्दिक प्रसन्नता हुई ही, सुनीता के माता-पिता को भी ज्ञानेश के व्यक्तित्व के प्रति सहज आकर्षण हो गया।

ज्ञानेश ने जाते-जाते सुनीता से धीरे से कहा ह्न ' तुम भी हमारे

(शेष पृष्ठ : 5 पर ....)

तार : त्रिमूर्ति फोन : 2707458, 2705581, **(Fax)** 2704127, E-mail : ptstjaipur@yahoo.com

(श्री कुन्दकुन्द कहान दि. जैन तीर्थ सुरक्षा ट्रस्ट मुम्बई द्वारा संचालित)

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

यहाँ पासपोर्ट साइज का नवीनतम फोटो लगावें।

प्रवेश प्रार्थना-पत्र

(नोट : प्रार्थना-पत्र प्रार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिये। सभी पूर्तियाँ सही-सही व पूरी होनी चाहिये।)

कक्षा ..... सत्र .....

नाम छात्र ..... पिता का नाम श्री ..... स्थान .....

आयु ..... जन्म तिथि .....पिता या संरक्षक की आजीविका (व्यापार)..... मासिक आय .....

परिवार में कितने व्यक्ति हैं ? ..... भाई .....बहिन ..... अन्य .....

कभी आपको कोई बड़ी बीमारी हुई हो या अभी हो तो विवरण दें .....

मातृभाषा ..... कोई अन्य भाषा जिसका ज्ञान हों .....

विद्यालय का नाम जहाँ से अन्तिम परीक्षा उत्तीर्ण की है .....

बोर्ड/विश्वविद्यालय का नाम (अन्तिम परीक्षा दी हो).....

अंतिम परीक्षा के लिये हुए विषय 1. ..... 2. ..... 3. .....4. ..... 5..... परिणाम ..... प्रतिशत.....

धार्मिक परीक्षा दी हो तो उसका विवरण दें (प्रमाणपत्र संलग्न करें) .....

मैंने विद्यालय एवं छात्रावास के प्रवेश संबंधी नियमों को पढ़कर समझ लिया है। मैं उनका तथा समय-समय पर संशोधित, परिवर्द्धित, परिवर्तित नियमों व अन्य दी गई सूचनाओं का पूर्ण रीति से पालन करूँगा, यदि इसके विरुद्ध चलूँ या अनुशासन भंग करूँ या संस्था के हित में बाधक समझा जाऊँ या परीक्षा में अनुत्तीर्ण रहूँ तो मुझे संस्था से पृथक् करने तक का दण्ड दिया जा सकता है, वह मुझे बिना आपत्ति किये मान्य होगा। मुझे विद्यालय एवं छात्रावास में प्रवेश दिया जाये।

पत्र-व्यवहार का पूरा पता : ..... हस्ताक्षर छात्र

..... दिनांक .....

पिनकोड ..... फोन नं. (एस.टी.डी. कोड सहित) .....

पिता या संरक्षक द्वारा भरा जाये

1. यह छात्र रिश्ते में मेरा ..... है। 2. मुझे विद्यालय एवं छात्रावास के सम्पूर्ण नियम स्वीकार हैं।

मैं स्वेच्छा से इस छात्र को प्रवेश दिलाना चाहता हूँ तथा प्रमाणित करता हूँ कि छात्र का उपर्युक्त लिखना सही है। यह संस्था के वर्तमान नियमों, समय-समय पर बनने वाले अन्य नियमों, सूचनाओं और अनुशासन का बराबर पालन करेगा तथा विरुद्ध चलने पर अधिकारियों द्वारा दिया हुआ दण्ड मान्य करेगा। छात्र की सभी गतिविधियों के लिए मैं जिम्मेदार रहूँगा।

नाम व पूरा पता : ..... हस्ताक्षर (पिता या संरक्षक)

..... दिनांक .....

छात्र के निवास स्थान के दो प्रतिष्ठित व्यक्तियों का प्रमाणीकरण

हम प्रमाणित करते हैं कि छात्र और उसके पिता या संरक्षक ने जो ऊपर लिखा है वह सही है। छात्र विद्यालय और छात्रावास में प्रविष्ट होने योग्य है।

नाम ..... नाम .....

पता ..... पता .....

....

हस्ताक्षर हस्ताक्षर

दिनांक ..... दिनांक .....

नोट : प्रवेश संबंधी आवश्यक नियम कृपया पीछे देखें। अन्तिम परीक्षा से आशय उस परीक्षा से है जिसके बाद आप विद्यालय में प्रवेश लेना चाहते हैं।

प्रवेश सम्बन्धी योगयता एवं आवश्यक नियम

1. विद्यालय एवं छात्रावास में माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, अजमेर (राजस्थान) के जैनदर्शन सहित उपाध्याय पाठ्यक्रम (हायर सैकण्डरी समकक्ष) एवं राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय जयपुर के जैनदर्शन शास्त्री पाठ्यक्रम (त्रिवर्षीय स्नातक बी.ए. समकक्ष) में अध्ययन हेतु दिगम्बर जैनधर्म में श्रद्धा रखने वाले छात्रों को प्रवेश दिया जाता है।

2. महाविद्यालय का सत्र जून के अन्तिम सप्ताह से आरम्भ होता है। प्रत्येक वर्ष के लिए नया प्रवेश लेना आवश्यक है। कृपांक (ग्रेस) से उत्तीर्ण छात्रों का प्रवेश नहीं हो सकेगा।

3. उपाध्याय कक्षा में प्रवेश हेतु सैकण्डरी (10 वीं बोर्ड) या उसके समकक्ष या उच्च परीक्षा पास **18 वर्ष से कम उम्र के छात्र ही** प्रवेश पा सकेंगे। सैकण्डरी परीक्षा में सम्पूर्ण विषय (हिन्दी, अंग्रेजी, विज्ञान, गणित, सामाजिक विज्ञान) सहित उत्तीर्ण होना आवश्यक है।

4. प्रवेश हेतु साक्षात्कार के लिए छात्र को पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा आयोजित ग्रीष्मकालीन शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर में पूरे दिन उपस्थित रहकर प्रशिक्षण प्राप्त करना आवश्यक है। **इस वर्ष यह शिविर दिनांक 8 मई से 25 मई, 2007 तक देवलाली (नासिक), महाराष्ट्र में आयोजित होगा।**

5. प्रवेश की स्वीकृति/अस्वीकृति की सूचना छात्र को जून के द्वितीय सप्ताह से पूर्व भेज दी जावेगी। संस्था अस्वीकृति का कारण बताने को बाध्य नहीं है।

6. छात्र को विद्यालय द्वारा निर्दिष्ट दिनचर्या का पालन करना व उपरोक्त पाठ्यक्रम के साथ विद्यालय द्वारा निर्धारित धार्मिक पाठ्यक्रम पढ़ना अनिवार्य है।

7. छात्र को प्रतिदिन देवदर्शन करने, छना हुआ पानी पीने, रात्रि भोजन, धूम्रपान नहीं करने, गुटखा तथा अभक्ष्य पदार्थ नहीं खाने का नियम रखना होगा।

8. छात्र को सम्बन्धित अधिकारियों द्वारा निर्दिष्ट स्थान पर ही रहना आवश्यक होगा। अपनी इच्छा से स्थान परिवर्तन नहीं किया जा सकेगा, छात्र अपने कमरे में धार्मिक वातावरण रखेंगे, अपने कमरे व उसके आस-पास के स्थान को स्वच्छ रखेंगे व बाथरूम आदि में गंदगी नहीं करेंगे।

9. छात्र अपने अतिथि को पूर्व स्वीकृति प्राप्त करके ही निर्दिष्ट स्थान पर ठहरा सकेंगे।

10. प्रत्येक कमरे में छात्र द्वारा ट्यूब लाईट एवं पंखें के अलावा हीटर, सिगड़ी, रेडियो, टेप, मोबाइल आदि का प्रयोग करना दण्डनीय अपराध होगा।

11. कोई भी छात्र नकदी या अन्य जोखिम अपने पास नहीं रखेगा, अन्यथा खो जाने पर उसकी स्वयं की ही जिम्मेदारी होगी। नकदी आदि कार्यालय में जमा कराके रसीद प्राप्त कर लेनी चाहिए।

12. धार्मिक अध्ययन से प्रत्यक्ष में उपेक्षा दिखाने वाले, बिना पर्याप्त कारण के परीक्षा में अनुपस्थित रहने वाले या अनुत्तीर्ण रहने वाले, अनुशासन भंग करने वाले छात्रों को बिना किसी पूर्व सूचना के तत्काल छात्रावास से निष्कासित किया जा सकेगा। वार्षिक परीक्षा में पास न होने वालों को सामान्यत: अगले वर्ष छात्रावास में प्रवेश नहीं मिलेगा। इस बारे में विद्यालय एवं छात्रावास अधिकारी का निर्णय ही अंतिम होगा व उसके लिए अपने निर्णय का कारण बताना आवश्यक नहीं होगा।

13. किसी भी कारण से छात्रावास से बाहर जाने हेतु संबंधित अधिकारी से अनुमति प्राप्त करना आवश्यक है। सत्र के बीच में अवकाश पर जाने के लिए प्रार्थना-पत्र देकर तीन दिन पूर्व लिखित स्वीकृति प्राप्त करना आवश्यक है। ग्रीष्मावकाश में कोई भी छात्र बिना अनुमति छात्रावास में नहीं रह सकेगा।

14. छात्रावास के बाहर छात्र के साथ घटित किसी भी घटना-दुर्घटना के लिये तथा छात्र द्वारा किये गये कृत्य के लिये वह स्वयं जिम्मेदार होगा, महाविद्यालय की किसी भी प्रकार की जिम्मेदारी नहीं होगी।

15. साथ ही समय-समय पर संशोधित, परिवर्द्धित एवं परिवर्तित नियमों का एवं अन्य आदेशों का छात्र को पूर्णरुपेण पालन करना होगा।

उपर्युक्त नियम हमें पूर्ण मान्य हैं।

हस्ताक्षर छात्र ..... **हस्ताक्षर पिता/संरक्षक .....**

प्रवेश प्रक्रिया

1. प्रवेश प्रार्थना-पत्र छात्र स्वयं भरकर माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की सैकण्डरी परीक्षा (10^{th}) की अंकसूची की सत्यापित प्रतिलिपि सहित 30 अप्रैल तक जयपुर कार्यालय में तत्पश्चात् प्रशिक्षण-शिविर में प्रत्यक्ष उपस्थित होकर जमा करा सकते हैं।

2. छात्रों को संस्था द्वारा आयोजित शिविर में प्रशिक्षण एवं साक्षात्कार (इन्टरव्यू) के लिए पूरे दिन उपस्थित रहना आवश्यक है। **इस वर्ष यह शिविर दिनांक 8 मई से 25 मई 2007 तक देवलाली (नासिक)(महा.) में आयोजित होगा।** प्रशिक्षण शिविर के दौरान ही छात्र के परीक्षाफल का प्रतिशत, प्रतिभा, चाल-चलन, धार्मिक रुचि व साक्षात्कार के आधार पर विद्यालय में प्रवेश हेतु छात्र का चयन किया जायेगा।

3. प्रवेश प्राप्ति की सूचना मिलने पर निर्दिष्ट तिथि को जयपुर आना अनिवार्य है।

प्रवेश-स्वीकृति पत्र

छात्र..... पिता श्री ..... को सत्र .....

हेतु कक्षा ..... में प्रवेश स्वीकृत/अस्वीकृत किया जाता है।

दिनांक : **ह. महामंत्री .....** **ह. प्राचार्य .....**

(ये तो सोचा ही नहीं, पृष्ठ : 2 का शेष ....)

घर आओ न कभी ! मेरे मम्मी-पापा तुम से मिलकर बहुत खुश होंगे। उन्हें तुम जैसी लड़कियाँ बहुत अच्छी लगती हैं।'

'ऐसा मुझमें क्या है ?' ह्न सुनीता ने कहा।

यह तो मैं नहीं जानता; पर तुम्हारा सरल स्वभाव, सादगीपूर्ण रहन-सहन, भारतीय पहनावा, धार्मिक रुचि तथा पूर्वाग्रहों से रहित विचार ह्न ये सब बातें मम्मी-पापा की रुचि के अनुकूल हैं। वे तुम्हें अपने बीच पाकर बहुत खुश होंगे।

सुनीता ने कहा ह्न ठीक है, आपके मम्मी-पापा की खुशी के लिए मैं जरूर आऊँगी; परन्तु मैं अपनी सहेली की सुविधा के अनुसार ही आ सकूँगी। देखती हूँ उसे कब समय मिलता है।

ज्ञानेश ने कहा ह्न 'यदि सहेली को समय एवं सुविधा न हो तो फोन पर बता देना। मैं स्वयं लेने आ जाऊँगा।'

' आप का कहना सही है; परन्तु आपको कष्ट करने की जरूरत नहीं पड़ेगी।' मैं स्वयं ही सहेली के साथ आ जाऊँगी।

'ठीक है, मैं प्रतीक्षा करूँगा। '

सुनीता ने एक बार अपने प्रोफेसर के भाषण में सुना था कि ह्न **' कोई कितना भी चिर-परिचित क्यों न हो ? नजदीकी रिश्तेदार और अत्यन्त विश्वसनीय ही क्यों न हो; फिर भी नर-नारी का एकसाथ एकान्तवास दोनों के सदाचार और शील सुरक्षा की दृष्टि से खतरे से खाली नहीं है। इसमें किसी व्यक्ति विशेष का अधिक दोष नहीं होता, यह उम्र ही ऐसी होती है, जिसमें जरा सी सावधानी हटी और दुर्घटना घटी। अत: किसी भी नर और नारी को यथासंभव एकान्त में एकसाथ नहीं रहना चाहिए; किसी अन्य पुरुष के साथ कहीं आना-जाना नहीं चाहिए।'**

बस, तभी से सुनीता प्रोफेसर के कथन का अक्षरश: पालन करती आ रही है। ज्ञानेश भी तभी से इसी नैतिक मूल्य के अन्तर्गत कॉलेज में लड़कियों से सदैव दूर ही रहता था।

फिर भी न जाने क्यों ? उसका हृदय भी सुनीता की ओर आकर्षित हुए बिना नहीं रहा। अब ज्ञानेश व सुनीता तन से दूर रहकर भी मन से एक-दूसरे के नजदीक थे।

जिनकी जैसी होनहार होती है, जिसके-जिनके साथ जैसे संस्कार होते हैं, उसका उनके साथ सहज ही वैसा बनाव बन जाता है।

ज्ञानेश के बर्थ-डे पर बधाई देने के बहाने वायदेनुसार सुनीता भी अपनी सहेली के साथ ज्ञानेश की बर्थ-डे पार्टी में सम्मिलित हुई।

सुनीता को आया देख ज्ञानेश को तो हर्ष हुआ ही; उसके मम्मी-पापा भी सुनीता की सादगी, सरलता, गंभीरता और उसका हंसमुख मुख-मण्डल देख हर्षित हुए। सुनीता ने ज्यों ही ज्ञानेश के माता-पिता का चरणस्पर्श किया तो ज्ञानेश की मम्मी ने उसे सहज ही स्नेहवश गले लगा लिया तथा सदा सुखी रहने और अपने लक्ष्य में सफल होने का मंगल आर्शीवाद दिया। ✲

अष्टाह्निका समाचार

1. सहारनपुर (उ.प्र.) : यहाँ श्री दिगम्बर जैन चौवीस तीर्थंकर जिनालय महावीर कॉलोनी में श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान का आयोजन हुआ। विधि-विधान के कार्य पण्डित अभिनन्दनकुमारजी खनियांधाना के निर्देशन में पण्डित अश्विनजी नानावटी नौगाँमा ने सम्पन्न कराये।

प्रतिदिन पण्डित अभिनन्दनकुमारजी के विधान की जयमाला पर एवं पण्डित अश्विनजी के समयसार पर मार्मिक प्रवचन हुये। अन्तिम दिन जुलुस निकालकर नगर परिभ्रमण किया गया।

2. पंढरपुर (महा.) : यहाँ श्री आदिनाथ दिग. जैन मन्दिर में पर्व के अवसर पर 64 ऋद्धि विधान का आयोजन किया गया। विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित प्रशांतकुमारजी मोहरे, सोलापुर ने सम्पन्न कराये। प्रतिदिन प्रात: छहढ़ाला एवं रात्रि में युवा वर्ग को ध्यान में रखते हुये जैन सिद्धान्तों पर पण्डित प्रशांतजी के मार्मिक प्रवचन हुये। **ह्न प्रणय दोशी**

3. रतलाम (म.प्र.) : यहाँ श्री आदिनाथ चैत्यालय हाथीवाला मन्दिर में लघु समयसार मण्डल विधान का आयोजन हुआ। इस अवसर पर पण्डित पद्मकुमारजी अजमेरा के प्रतिदिन प्रात: मोक्षमार्गप्रकाशक पर प्रवचन हुये।

4. काटोल (महा.) : यहाँ पर्व के अवसर पर कल्पद्रुम महा मण्डल विधान का आयोजन किया गया। इस अवसर पर प्रात: पंचास्तिकाय एवं रात्रि में बृहत्द्रव्य संग्रह पर पण्डित नन्दकिशोरजी मांगुलकर के प्रवचन हुये। ज्ञातव्य है कि आपके द्वारा ही यहाँ प्रतिदिन दोनों समय स्वाध्याय चलता है।

5. रायपुर (छ.ग) : पर्व के अवसर पर यहाँ श्री चन्द्रप्रभ चैत्यालय में महिला मण्डल द्वारा सिद्धचक्रमण्डल विधान का आयोजन किया गया।

6. शिरडशहापुर (महा.) : यहाँ अष्टान्हिका पर्व में प्रतिदिन सामूहिक पूजन-विधान के पश्चात् पण्डित प्रशांतजी काले के प्रवचनों का लाभ मिला। आपके द्वारा सायंकाल बालकक्षा एवं रात्रि में पंचास्तिकाय पर प्रवचन हुये। दोपहर में प्रतिदिन पण्डित रमेशचंदजी महाजन द्वारा तत्त्वचर्चा का लाभ मिला। **ह्न नाभिराज महाजन**

महामस्तकाभिषेक में फैडरेशन-बैंगलोर

श्रवणबेलगोला : महामस्तकाभिषेक के अवसर पर अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन बैंगलोर द्वारा डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल द्वारा लिखित एवं कन्नड भाषा में अनुवादित अनेकान्त-स्याद्वाद, युगपुरुष श्री कानजीस्वामी, वीतराग-विज्ञान भाग-1,2,3, मुक्ति का मार्ग तथा कर्नाटक के दि. जैन मंदिर आदि पुस्तकों का नि:शुल्क वितरण किया गया।

साथ ही फैडरेशन सदस्यों द्वारा कार्यक्रम हेतु श्रवणबेलगोला आनेवाले व्यक्तियों के लिये दिगम्बर जैन ट्रस्ट द्वारा संचालित दलीचन्द-जुगराज धर्मशाला में आवास आदि की नि:शुल्क व्यवस्था की गई।

समारोह के पश्चात् बैंगलोर में डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल एवं ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री के प्रवचनों का लाभ मिला। **ह्न अखिलेश जैन**

प्रवचनसार का सार 48

ह्न डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

आचार्य अमृतचन्द्र ने इस गाथा का अर्थ विभिन्न ग्रन्थों में भिन्न-भिन्न प्रकार से किया है। 172वीं गाथा में अरस, अरूप, अगंध, अस्पर्श आदि के लिए एक-एक बोल ही लिखा है।

हाँ, एक बात अवश्य है कि इस गाथा में अलिंगग्रहण के संबंध में प्रश्न उठाते हुए उसके २० बोल लिखे हैं, २० अर्थ किये हैं; जिनका विस्तृत विवेचन प्रवचनसार अनुशीलन में विस्तार से किया जा रहा है।

जिन्हें उक्त प्रकरण के संबंध में विशेष जिज्ञासा हो; वे अपनी जिज्ञासा वहाँ से शान्त करें। उनका उक्त कथन इसप्रकार है ह्न

आत्मा (१) रसगुण के अभावरूप स्वभाववाला होने से, (२) रूप गुण के अभावरूप स्वभाववाला होने से, (३) गंधगुण के अभावरूप स्वभाववाला होने से, (४) स्पर्शगुणरूप व्यक्तता के अभावरूप स्वभाववाला होने से, (५) शब्दपर्याय के अभावरूप स्वभाववाला होने से, तथा (६) इन सबके कारण (अर्थात् रस, रूप, गंध इत्यादि के अभावरूप स्वभाव के कारण) लिंग के द्वारा अग्राह्य होने से और (७) सर्वसंस्थानों के अभावरूप स्वभाववाला होने से, आत्मा को पुद्गलद्रव्य से विभाग का साधनभूत (१) अरसपना, (२) अरूपपना, (३) अगंधपना, (४) अव्यक्तपना, (५) अशब्दपना, (६) अलिंगग्राह्यपना और (७) असंस्थानपना है।

जीव को अरस, अरूप, अगंध कहने के बाद आचार्य जीव को अव्यक्त कहते हैं। अव्यक्त का तात्पर्य होता है, जो प्रकट नहीं है; जबकि इसी ग्रंथ में पूर्व में आत्मा को प्रगट अतिसूक्ष्म विशेषण भी दिया है अर्थात् आत्मा प्रगट तो है; लेकिन अतिसूक्ष्म है।

सूक्ष्म और स्थूल ज्ञान के सन्दर्भ में एक व्याख्या तो यह है कि मूर्तिक पदार्थों के ज्ञान को स्थूलज्ञान कहते हैं और अमूर्तिक पदार्थों के ज्ञान को सूक्ष्मज्ञान कहते हैं।

दूसरी व्याख्या यह है कि जो केवलज्ञानगम्य है, वह विषय अपने लिए सूक्ष्म है और जो अपनी बुद्धिगम्य है, वह अपने लिए स्थूल है। मोक्षमार्गप्रकाशक में भी इसी दूसरी अपेक्षा से वर्णन आया है।

आचार्य समंतभद्र ने भी आप्तमीमांसा की ५ वीं कारिका में सर्वज्ञ-सिद्धि के संदर्भ में लिखा है ह्न

सूक्ष्मान्तरितदूरार्थाः प्रत्यक्षाः कस्यचिद्यथा।
अनुमेयत्वतोऽग्न्यादिरिति सर्वज्ञसंस्थितिः।।

इसके अर्थ में आचार्यदेव ने सूक्ष्म पदार्थ के उदाहरण में परमाणु को प्रस्तुत करते हुए कहा है कि परमाणु सूक्ष्म है।

इसप्रकार यदि भगवान आत्मा को अनुभव करके देखा जाय तो अत्यंत प्रगट है; क्योंकि अनंत केवलज्ञानियों के द्वारा अत्यंत स्पष्टरूप से जाना जाता है, छिपा हुआ नहीं है। भगवान आत्मा हमारे ज्ञान में नहीं आ रहा है ह्न इस अपेक्षा से अव्यक्त है और इन्द्रियों के द्वारा भी जानने में नहीं आ रहा, इसलिए भी अव्यक्त है।

उसके बाद आचार्यदेव ने जीव को चेतनागुण से युक्त कहा, ज्ञानोपयोग और दर्शनोपयोग को जीव का लक्षण कहा। इसके पूर्व अरस, अगंध, अरूप, अव्यक्त ह्न ये सभी तो जीव में नकारात्मक लक्षण थे और जीव चेतनागुण वाला है ह्न यह सकारात्मक लक्षण है।

तदनन्तर जीव को अनिर्दिष्टसंस्थान से युक्त कहा अर्थात् जीव असंख्यातप्रदेशी होने पर भी उसका आकार निश्चित नहीं है; क्योंकि कभी तो मनुष्याकार में रहता है और देवाकार हो जाता है।

यदि कोई कहे कि 60-70 वर्ष तक जबतक मनुष्य अवस्था में है, तबतक तो मनुष्याकार ही है न ? उससे कहते हैं कि मनुष्याकार भी तो एक नहीं है, वह भी प्रतिसमय बदलता है, बैठे हुए मनुष्य की आत्मा का आकार अलग है और खड़े हुए मनुष्य की आत्मा का अलग। हाथ हिलते रहने में, साँस लेते रहने में ह्न इत्यादि संसारी जीवों की अवस्थाओं में आत्मा के प्रदेशों का आकार भी बदलता रहता है। सिद्धजीवों का अनंतकाल तक एक ही आकार रहता है। निश्चय से जीव का आकार असंख्यातप्रदेशी है और व्यवहार में कोई न कोई आकार है और वह आकार अनिर्दिष्ट है। निर्दिष्ट अर्थात् जिसे कहा जा सके और अनिर्दिष्ट अर्थात् जिसे नहीं कहा जा सके।

आत्मा का आकार जानना तो सम्भव है; क्योंकि केवलज्ञानी के ज्ञान में तो आकार जानने में आ ही रहा है; लेकिन कहना केवलज्ञानी को भी सम्भव नहीं है। इसप्रकार भगवान आत्मा अनिर्दिष्टसंस्थानवाला है।

आचार्य जीव को अनिर्दिष्टसंस्थान कहने के बाद कहते हैं कि यह आत्मा अलिंगग्रहण अर्थात् इन्द्रियों से पकड़ में आनेवाला नहीं है।

कोई ऐसा प्रश्न करें कि शास्त्रों में बार-बार ऐसा कहा जाता है कि अपनी आत्मा को जानो, तो आत्मा में वे ऐसे कौन से चिन्ह हैं; जिनसे आत्मा को ग्रहण करें ? इसी प्रश्न के समाधान के लिए इस गाथा में आत्मा को अलिंगग्रहण कहा गया है।

लिंग शब्द का अर्थ चिह्न होता है। स्त्रीलिंग, पुल्लिंग और नपुंसकलिंग में भी अन्त में लगे लिंग शब्द चिह्न अर्थ को ही बताते हैं। मनुष्य जाति में स्त्रीलिंग, पुल्लिंग और नपुंसकलिंग के भेद से तीन प्रकार के भेद हैं। इन तीनों में मुख्यरूप से जिन अंगों में अन्तर है, उन अंगों को ही लिंग शब्द से कहा जाता है। नाक, कान आदि तो स्त्री, पुरुष और नपुंसक में समान ही हैं। इसप्रकार पहिचान के चिह्न को ही लिंग कहते हैं।

भगवान आत्मा चिह्नों से पकड़ में आनेवाला नहीं है, वह तो

अलिंगग्रहण है। अब यहाँ पर आचार्यदेव ने लिंग शब्द के अलग-अलग तरीके से बीस अर्थ किए हैं। लिंग का अर्थ अनुमान भी होता है; अत: भगवान आत्मा अनुमान से पकड़ में नहीं आएगा आदि। इसप्रकार वह भगवान किन-किन से पकड़ में नहीं आएगा, उसके लिए अलिंगग्रहण के बीस बोल हैं।

यहाँ अलिंगग्रहण के स्थान पर अलिंगग्राह्य शब्द नहीं लिया; क्योंकि अलिंगग्रहण शब्द दोनों ओर प्रयुक्त हो सकता है। इसी आधार से उन्होंने अलिंगग्रहण के बीस अर्थ निकाले हैं।

जिसप्रकार ज्ञान शब्द जानने रूप क्रिया के रूप में भी है और जानने रूप गुण के रूप में भी है और ज्ञान जिस आत्मा का गुण है, उस आत्मा के लिए भी ज्ञान शब्द का प्रयोग होता है। इसप्रकार ज्ञान का अर्थ आत्मा भी है, ज्ञान गुण भी है और जानने रूप क्रिया भी है।

सर्वार्थसिद्धि में भी कहा है कि जिसके द्वारा जाना जाए, उसे भी ज्ञान कहते हैं और जिसके आधार से जाना जाए, उसे भी ज्ञान कहते हैं एवं जाननेरूप क्रिया को भी ज्ञान कहा जाता। कर्त्ता के रूप में भी ज्ञान शब्द का प्रयोग होता है, करण एवं अधिकरण के रूप में भी ज्ञान शब्द का प्रयोग होता है तथा जाननक्रिया के रूप में भी ज्ञान का प्रयोग होता है।

इसीप्रकार ग्रहण शब्द भी सामान्य है; इसीलिए आचार्यदेव ने अलिंगग्रहण के बीस अर्थ किये हैं।

इसप्रकार आचार्यदेव ने इस गाथा में यही कहा है कि चिह्नों से भगवान आत्मा पकड़ में आनेवाला नहीं है। जब अपने ज्ञानोपयोग को सीधे भगवान आत्मा में लगाएंगे, तभी भगवान आत्मा जाना जायेगा।

गाथा 172 में जीव को अरस, अरूप, अगंध, अव्यक्त, चेतनागुण युक्त, अशब्द, अलिंगग्रहण और अनिर्दिष्ट संस्थान कहने के बाद गाथा 173 में यह समस्या प्रस्तुत करते हैं कि अमूर्त आत्मा के, स्निग्धरुक्षत्व का अभाव होने से बंध कैसे हो सकता है ?

जब भगवान आत्मा शुद्ध, बुद्ध, निरंजन एवं निराकार है तो वह कर्मों के चक्कर में कैसे फँस गया ? अर्थात् आत्मा से शरीर का संयोग कैसे हो गया? वे कौन से कारण हैं, जिनसे इस आत्मा को शरीर समझ लिया गया।

जयपुर में एक नाई राजा के यहाँ रोज दाढी बनाने जाया करता था एवं उनसे गप्पे भी लगाया करता था; क्योंकि राजा साहब उस समय हल्के मूड में होते थे। सभी लोग उसे खबासजी कहते थे। एक बार राजा साहब उससे किसी बात पर प्रसन्न हो गए और उससे कोई वरदान माँगने को कहा। तब खबासजी ने महाराजजी से कहा कि ह्न

''हुजूर ! मैं तो बस इतना चाहता हूँ कि अब जब आपकी सवारी निकलेगी, तब मैं भी भीड़ में दर्शनों के लिए खड़ा रहूँगा; उस समय जब मैं आपको नमस्कार करूँ तो आप मुझे बुलाकर अपने रथ में दो मिनिट के लिए बिठा लेना और मेरी पीठ ठोकना तथा मुझसे दो बातें पूछना। मैं तो बस आपकी इतनी ही कृपादृष्टि चाहता हूँ; मुझे और कुछ नहीं चाहिए।''

जब राजाजी की सवारी निकली, तो पूरे गाँव ने राजाजी को खबासजी से प्रेम से बोलते हुए और उसकी पीठ पर हाथ रखते हुए देखा। अब वह सभी से यह कहता कि मैं राजाजी से तुम्हारा यह काम निकलवा सकता हूँ। यदि कोई उसे काम नहीं बताता, तब वह यह कहता कि राजाजी की दृष्टि तुम्हारे मकान पर है, आज उन्होंने तुम्हारे मकान का यह हिस्सा तोड़ने को कहा है, मैं चाहूँ तो तुम्हारा मकान बचा सकता हूँ। ह्न इसप्रकार खबासजी ने राजा की कृपादृष्टि से लोगों को ठगना शुरू कर दिया और खबासजी की कोठी भी बन गई। जयपुर में खबासजी का रास्ता भी बन गया; जो आज भी उसी नाम से जाना जाता है।

इसीप्रकार आत्माराम राजाजी ने शरीर के साथ संयोग किया और शरीर को ही अपना मान लिया। यही इसके बंधन का कारण बन गया।

मुत्तो रूवादिगुणो बज्झदि फासेहिं अण्णमण्णेहिं।
तत्विपरीदो अप्पा बज्झदि किध पोग्गलं कम्मं।।१७३।।

(हरिगीत)

मूर्त पुद्गल बंधे नित स्पर्श गुण के योग से।
अमूर्त आतम मूर्त पुद्गल कर्म बाँधे किसतरह।।१७३।।

मूर्त पुद्गल तो रूपादिगुणयुक्त होने से परस्पर स्पर्शों से बंधते हैं; परन्तु उससे विपरीत अमूर्त आत्मा पौद्गलिक कर्म को कैसे बाँधता है?

यहाँ पर आश्चर्य प्रगट करते हुए यह प्रश्न उपस्थित किया गया है कि पुद्गल तो मूर्तिक है, रूपादि गुणोंवाला है और भगवान आत्मा उससे रहित है; तब यह आत्मा पुद्गल कर्मों से किसप्रकार बंध गया ?

इसके पूर्व की गाथा में भी यही कहा था कि शरीर स्पर्श, रस, गंध और वर्ण वाला है तथा आत्मा चेतन तत्त्व है। जब जीव और पुद्गल दोनों जुदे-जुदे पदार्थ हैं और दोनों में अत्यन्ताभाव है, तब फिर इन दोनों का संयोग कैसे हो गया ?

अरे भाई ! आत्मा ने शरीर को जाना और मिथ्यात्व के कारण उसे अपना मान लिया और बंधन में पड़ गया। **(क्रमश:)**

देवलाली में बालकों हेतु विशेष कक्षायें

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर द्वारा संचालित 40वें वीतराग-विज्ञान आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर देवलाली में दिनांक 9 मई से 26 मई, 2006 तक बाल मनोविज्ञान की विशेषज्ञा एवं विविध बाल साहित्य की रचयिता **डॉ.(श्रीमती) शुद्धात्मप्रभा टडैया, मुम्बई** द्वारा बालकों के लिये विशेष कक्षाओं का आयोजन किया जायेगा। अधिक से अधिक बालक इस अवसर का लाभ लेवें।

रजिस्ट्रेशन आर. एन. आई. 31109/77

डॉ. भारिल्ल का 2006 में विदेश कार्यक्रम

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी धर्मप्रचारार्थ विदेश जा रहे हैं। अमेरिका की यह उनकी 23 वीं विदेश यात्रा है। जिन भारतवासी बन्धुओं के परिवार या सम्बन्धी निम्नस्थानों पर रहते हों, वे उन्हें सूचित कर दें। उनकी सुविधा के लिए वहाँ के फोन एवं फैक्स नं.दिये जा रहे हैं, जहाँ डॉ. भारिल्ल ठहरेंगे।

उनका नगरवार कार्यक्रम निम्नानुसार है ह्न

क्र.	शहर	सम्पर्क-सूत्र	दिनांक
1.	मियामी	महेन्द्र शाह (घर) 305-595-3833 (ऑ.)305-371-2149 E-mail : bhitap@bellsouth.net	26 मई से 1 जून
2.	डलास	अतुल खारा (घर) 972-867-6535 (ऑ.)972-424-4902(फै.)972-424-0680 E-mail : insty@verizon.net	2 से 8 जून
3.	न्यूयॉर्क	डॉ. धीरूभाई शाह (घर) 516-922-6056 (मो.) 516-603-4178	9 से 12 जून
4.	लॉसएंजिल्स	नरेश पालकीवाला (घर) 562-404-1729 (ऑ.) 626-814-8425 (एक्स.8725)	13 से 18 जून
5.	शिकागो	निरंजन शाह 847-330-1088 डॉ. विपिन भायाणी (घर) 815-939-0056 (ऑ.) 815-939-3190 (फै.) 815-939-3159	19 से 29 जून
6.	हर्टफोर्ड	अतुल खारा (घर) 972-867-6535 (ऑ.)972-424-4902(फै.)972-424-0680 E-mail : insty@verizon.net	30 जून से 4 जुलाई
7.	क्लीवलैंड	कुशल बैद (घर) 440-339-9519 E-mail : kushalbaid@att.net	4 से 11 जुलाई
8.	वाशिंगटन डी.सी.	नरेन्द्र जैन (घर) 703-426-4004 (फै.) 703-321-7744 E-mail : jainnarendra@hotmail निरेन नागदा 301-540-7708	12 से 17 जुलाई

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

07 से 09 अप्रैल, 2006	**दिल्ली**	**गुरुदेव जयन्ती**
26 से 29 अप्रैल, 2006	**देवलाली**	**गुरुदेव जयन्ती**
09 से 26 मई, 2006	**देवलाली**	**प्रशिक्षण-शिविर**
26 मई से 18 जुलाई, 06	**विदेश**	**धर्म प्रचारार्थ**
23 जुलाई से 1 अगस्त,06	**जयपुर**	**शिक्षण-शिविर**
04 से 09 अगस्त, 2006	**लंदन**	**पंचकल्याणक प्रतिष्ठा**
20 से 27 अगस्त, 2006	**मुम्बई**	**श्वेताम्बर पर्यूषण पर्व**

हार्दिक बधाई !

जबलपुर (म.प्र.) : यहाँ अखिल भारतीय दर्शन परिषद के 50वें (स्वर्ण जयंती) अधिवेशन के अवसर पर रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर के तत्त्वावधान में आयोजित त्रिदिवसीय अधिवेशन में तर्क एवं ज्ञान मीमांसा विभाग में पठित सर्व आलेखों में श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के स्नातक श्री ऋषभजी शास्त्री, ललितपुर के लेख को सर्वश्रेष्ठ चुना गया। इसके लिये उन्हें डॉ. विजयश्री स्मृति युवा पुरस्कार प्रदान किया गया।

जैनपथप्रदर्शक परिवार की ओर से आपको हार्दिक बधाई !

साधर्मी मिलन समारोह

बांसवाड़ा (राज.) : श्री महावीर दि. जैन चैरिटेबिल ट्रस्ट, हिरणमगरी सेक्टर 11 उदयपुर के तत्त्वावधान में प्रतिवर्ष होली के अवसर पर साधर्मी मिलन समारोह का आयोजन किया जाता रहा है।

इसी श्रृंखला में दिनांक 15 व 16 मार्च, 06 को छठवाँ होली साधर्मी मिलन समारोह ज्ञायक चैरिटेबिल ट्रस्ट बांसवाड़ा द्वारा निर्माणाधीन 'ध्रुवधाम' में किया गया।

समारोह में पण्डित खेमचन्दजी शास्त्री उदयपुर, पण्डित पीयूषकुमारजी शास्त्री जयपुर, पण्डित राकेशजी शास्त्री दाहोद, पण्डित रितेशजी शास्त्री, पण्डित आकाशजी शास्त्री, पण्डित निलयजी शास्त्री आदि विद्वानों के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ मिला।

दिनांक 15 मार्च को दोपहर में श्री कन्हैयालालजी दलावत की अध्यक्षता में तात्त्विक गोष्ठी हुई। सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति एवं रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

समापन समारोह के अवसर पर श्री महीपालजी 'ज्ञायक' ने आगामी 30 नवम्बर से 6 दिसम्बर, 06 तक होनेवाले पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का भावभीना आमंत्रण दिया।

सम्पूर्ण कार्यक्रम पण्डित राजकुमारजी शास्त्री के निर्देशन एवं संचालन में सम्पन्न हुये। **ह्न गणतंत्र जैन**

जैनपथप्रदर्शक (पाक्षिक) अप्रैल (प्रथम) 2006
RJ / J. P. C / FN-064 / 2006-08

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा,** डबल एम.ए. जैनविद्या व धर्मदर्शन तथा इतिहास, नेट एवं **पण्डित जितेन्द्र वि.राठी,** साहित्याचार्य
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम. आई. रोड, जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, ए-4, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो कृपया निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
तार : त्रिमूर्ति, जयपुर **फैक्स :** 2704127